



अयोध्या और राममंदिर से रहा है गोरक्षपीठ के तीन पीढ़ियों का नाता

ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ ने दिया मंदिर आंदोलन को संगठित रूप



लखनऊ। अयोध्या और राममंदिर से रहा है गोरक्षपीठ के तीन पीढ़ियों का नाता। यह नाता करीब 100 साल पुराना है। इस दौरान राममंदिर को लेकर होने वाले हर आंदोलन में तबके पीठाधीश्वरों की केंद्रीय भूमिका रही है। गोरखपुर स्थित इस पीठ के मौजूदा पीठाधीश्वर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं। उनके दादा गुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ और पुत्र्य गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेधनाथ ने जिस अयोध्या और वहां जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर का सपना देखा था। जिस सपने के लिए संघर्ष किया था वह 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ साकार होने को है।

शांतिपूर्ण समाधान के लिए हर सरकार को दिया मौका

1984 में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के गठन के बाद से आंदोलन के निर्णायक होने तक महंत अवेधनाथ ने हर सरकार को शांतिपूर्ण समाधान का मौका दिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी, बीपी सिंह, चंद्रशेखर, पीवी नरसिम्हा राव से समय-समय पर उनकी बातों भी हुईं। सरकारें कोरे आश्वासन से आगे नहीं बढ़ती थीं और महंत जी ने जन्मभूमि को मुक्त करने के संकल्प पर अडिग रहे।

श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति को हुआ राजनीति में दोबारा प्रवेश

तत्कालीन मंत्रीमंत्रि विधानसभा क्षेत्र से लगातार पांच बार, 1962 से लेकर 1977 तक के चुनाव में विभाजक चुने गए महंत अवेधनाथ 1969 में अपने गुरु महंत दिग्विजयनाथ के ब्रह्मलीन होने के बाद रिक्त हुए गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र के उस चुनाव में संसद चुने गए। 1980 में मीनाक्षीपुरम में धर्मनिरपेक्ष की घटना के बाद उन्होंने राजनीति की बजाय खुरद को सामाजिक समस्याओं के अभियान में समर्पित कर दिया। सितंबर 1989 में महंत अवेधनाथ के नेतृत्व में दिल्ली में हुए विराट हिंदू सम्मेलन की मेज़ा के अनुसार योगी की मौजूदगी में ही राममंदिर निर्देश मोदी ने जन्मभूमि पर भव्य एवं दिव्य राम मंदिर की नींव रखी। युद्ध स्तर इसका जारी निर्माण अनवर पूर्णता की ओर है।

दादगुरु और गुरुदेव के सपनों और संघर्षों को मूर्त कर रहे योगी

बतौर उत्तराधिकारी महंत अवेधनाथ के साथ दो दशक से लंबा समय गुजारे वाले उत्तर प्रदेश के मौजूदा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी इस पुरे परिवेष्ट की छाप पड़ी। बतौर सांसद उन्होंने अपने गुरु के सपने को स्वर्णिम आभा दी। मुख्यमंत्री होने के बावजूद अपने पर की गरिमा का पूरा खयाल रखते हुए कभी राम और रामनगरी से दूरी नहीं बनाई। गुरु के सपनों को अपना बना लिया। नतीजा सबसे सपने ने। उनके मुख्यमंत्री रहते हुए ही राम मंदिर के पथ में देश की सीमा अदलत का फैसला आया। देश और दुनिया के करोड़ों रामभक्तों, संतों, धर्माचार्यों की मेज़ा के अनुसार योगी की मौजूदगी में ही राममंदिर निर्देश मोदी ने जन्मभूमि पर भव्य एवं दिव्य राम मंदिर की नींव रखी। युद्ध स्तर इसका जारी निर्माण अनवर पूर्णता की ओर है।

त्रेतायुगीन वैभव से सराबोर की जा रही अयोध्या

बतौर मुख्यमंत्री योगी जितनी बार गए, अयोध्या को कुछ न कुछ सीगात देकर आए। उनकी मेज़ा अयोध्या को दुनिया का सबसे खूबसूरत पेंटवेल बनाने की है। इसके अनुरूप ही अयोध्या के कायाकल्प का काम जारी है। योगी सरकार की मेज़ा है कि अयोध्या उनकी ही वजह दिखे जितनी त्रेता युग में थी। इसकी कल्पना गोस्वामी तुलसीदास ने कुछ इस तरह की है, 'अवधपुरी अति रचि बनहीं। देवद्वर सुमन कोट कोट।' अयोध्या के इस स्वरूप की एक झलक दीर्घोत्तव के दौरान दिखली थी। कायाकल्प के बाद यह स्वरूप खो जाएगा। तब भावमान श्रीराम की अयोध्या कुछ वैसी ही होगी जिसका वर्णन उन्होंने खुरद की इस तरह किया था 'अवधपुरी सम प्रिय नहीं सोखे, यह प्रसंग जानु कोट कोट, जन्मभूमि मम पुरी सुखलान्। उत्तर दिशि वह सरजु पार्वती।'

तिरुपति के लद्दु प्रसादम की तरह हनुमानगढ़ी के लद्दु को भी मिलेगा जीआई टैग

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इन प्रयासों का अब असर दिखने लगा है। तिरुपति के लद्दु प्रसाद को तरह अयोध्या के हनुमानगढ़ी के लद्दु को भी जीआई टैग मिलेगी की संभावना है। इसके लिए चेन्नई स्थित जीआई (जि यो पी) फिफ ल इंजिनेरान) कार्यालय में प्रस्ताव भेजा है, जहां इसे संभाव्य देर साबित कर लिया गया है। इससे हनुमान गढ़ी के हनुमानगढ़ी में भी लॉ का प्रभाव है। गौरवलय है कि सीएम योगी प्रदेश के सभी

जीआई टैग का आवेदन स्वीकार

पराश्री से सम्मिलित और जीआई मैन के रूप में विश्वाच ठाँ रजनीकान ने बताया कि यह हमारे लिए बहुत ही गौरवमयी है। सिद्धी-लखनऊ, उत्तर प्रदेश के विशिष्ट सहायों से अयोध्या हनुमानगढ़ी लद्दु के जीआई टैग के लिए आवेदन किया गया है, जिससे संभाव्य की स्वीकार कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि अयोध्या हनुमानगढ़ी के लद्दु के जीआई पंजीकरण करने का अवसर इस ऐतिहासिक माह में प्राप्त हुआ है, जब प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के उद्घाटन की वजह नवकदीक आ रही है। उन्होंने कहा प्रक्रिया में कुछ माह लग सकते हैं, जिसके बाद हनुमानगढ़ी के लद्दु को जीआई टैग मिल जाएगा और तिरुपति के प्रसाद लद्दु की तरह ही यह भी जीआई टैग में शामिल हो जाएगा।

मिलने के स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए सतत प्रयासरत है।

प्राणप्रतिष्ठा से पहले अब नहीं होगा रामलला की प्रतिमा का अयोध्या भ्रमण

अयोध्या। अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले 17 जनवरी को प्रस्तावित रामलला की प्रतिमा के नगर भ्रमण कार्यक्रम का मंदिर टट्टर ने रद्द कर दिया है। टट्टर के एक पदाधिकारी ने संभाव्य को बताया कि प्रतिमा को पूरे अयोध्या नगर में घुमने का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है। इसके बजाय, टट्टर उसी दिन राम जन्मभूमि मंदिर परिसर के अंदर प्रतिमा के भ्रमण की व्यवस्था करेगा। टट्टर पदाधिकारी ने बताया कि सुरक्षा परीक्षणों की सलाह पर टट्टर ने सुरक्षा कारणों से इस प्रस्तावित कार्यक्रम को रद्द कर दिया है। कार्यक्रम रद्द करने का फैसला श्री राम जन्मभूमि तीर्थ

वैकट के बाद लिया। अयोध्या सरकार के मुख्यालय, टट्टर की वैकट में इस बात पर चर्चा हुई कि जब रामलला की नवी प्रतिमा को शहर में ले जाया जाएगा तो ब्रह्मल्लु और तीर्थयात्री दर्शन के लिए उमड़ पड़ेंगे और प्रशासन के लिए भीड़ को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाएगा।

ब्रह्मल्लु इस दिन आएंगे जॉर्जे

वहीं, अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद टट्टर संसदेक संघ देश के एक से सवा करोड़ ब्रह्मल्लुओं को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में विराजित

रु तो श्रीराम जन्मभूमि स्थित मंदिर पर फिर से रामलला आंदोलन विराजमान हो इस बाबत हिस्ट्रट संघर्ष की शुरुआत इसको गिराए जाने के बाद से ही शुरू हो गया था। मुगल काल से लेकर ब्रिटिश काल के गुलामी के दौर और आजाद भारत का कटीब 500 साल का कालखंड इसका प्रमाण है। इन सारे संघर्षों और इसके लिए खुरद को बलिदान देने वालों के दस्तावेजी सबूत भी हैं।

लेकिन आजादी के बाद इसे पहाली बार रणनीति रूप से संगठित स्वरूप देने श्रेय गोरखपुर स्थित गोरक्षपीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दादा गुरु ब्रह्मलीन गोर्क्ष। पीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ को जाता है।

1935 में गोर्क्ष पीठाधीश्वर बनने के बाद से ही उन्होंने इस बाबत प्रयास शुरू कर दिया था। इस क्रम में उन्होंने अयोध्या के अलग अलग मठों के साथ संतों को एकजुट करने के साथ ही जातीय विभेद से परे हिंदुओं को समान भाव व सम्मान के साथ जोड़ा। 22/23 दिसंबर 1949 को प्रभु श्रीरामलला के विग्रह के प्रकटीकरण के नी तहत पूर्व हो

महंत दिग्विजयनाथ के नेतृत्व में अखंड रामायण के पाठ का आयोजन शुरू हो चुका था। श्रीरामलला के प्रकटन पर महंत जी खुरद वहां मौजूद थे। प्रभु श्रीराम के विग्रह के प्रकटीकरण के बाद मामला अदालत पहुंचा। इसके चलते विवादित स्थल पर तात्का भले जड़ दिया गया पर पहाली बार वहां पुनर्जातियों को धैर्यक पूजा को अनुमति भी मिल गई।

श्रीरामलला के प्रकटीकरण के बाद मंदिर आंदोलन को एक नई दिशा देने वाले महंत दिग्विजयनाथ 1969 में

संस्कार के तत्कालीन गुरुमंजी बूटा सिंह ने महंत जी से बातचीत का आग्रह किया था लेकिन महंत जी ने रेली के बाद ही बातचीत संभव होने की बात कही। 25 सितंबर को मुलाकात हुई तो बूटा सिंह ने शिलान्यास कार्यक्रम स्थगित करने का निवेदन किया लेकिन महंत जी निर्णय पर अडिग रहे। इसके बाद लखनऊ में बूटा सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने महंत जी, महंत जिसमें लाखों लोग शामिल हुए। महंत अवेधनाथ की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन से तत्कालीन सरकार हिल गई। तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी से महंत जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और मांग पत्र साँप।

धर्मजायों के आह्वान पर 22 दिसंबर 1989 को दिल्ली के बोट क्लब पर विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। महंत जी की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के लिए 9 नवंबर 1989 को शिलान्यास का ऐलान कर दिया गया। बहुत क्लब की इस रेली से पूर्व 20 सितंबर 1989 को भारत

संस्कार के तत्कालीन गुरुमंजी बूटा सिंह ने महंत जी से बातचीत का आग्रह किया था लेकिन महंत जी ने रेली के बाद ही बातचीत संभव होने की बात कही। 25 सितंबर को मुलाकात हुई तो बूटा सिंह ने शिलान्यास कार्यक्रम स्थगित करने का निवेदन किया लेकिन महंत जी निर्णय पर अडिग रहे। इसके बाद लखनऊ में बूटा सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने महंत जी, महंत जिसमें लाखों लोग शामिल हुए। महंत अवेधनाथ की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन से तत्कालीन सरकार हिल गई। तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी से महंत जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और मांग पत्र साँप।

धर्मजायों के आह्वान पर 22 दिसंबर 1989 को दिल्ली के बोट क्लब पर विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। महंत जी की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के लिए 9 नवंबर 1989 को शिलान्यास का ऐलान कर दिया गया। बहुत क्लब की इस रेली से पूर्व 20 सितंबर 1989 को भारत

प्राणप्रतिष्ठा होते ही तीन दशक बाद 85 साल की बुजुर्ग तोड़ेंगी मौन व्रत

अयोध्या। अयोध्या में राम मंदिर बनाना किसी एक इंसान का नहीं, बल्कि कई हजारों-लाखों लोगों का सपना है। अब 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह के साथ ही लोगों का ये सपना पूरा हो जाएगा। वहीं, शहराई की 85 साल की एक बुजुर्ग महिला भी तीन दशक बाद अपना मौन व्रत तोड़ने के लिए तैयार हैं। दशसाल, 1992 में बाबरी मस्जिद गिराए जाने के दिन ही उन्होंने अपनी मानस श्रुत कर दी थी और संकल्प लिया था कि राम मंदिर का उद्घाटन होने के बाद ही वह अपना मौन व्रत तोड़ेंगी। मौनी भाता के नाम से लोकप्रिय।

शहराई के भगवद की रहने वाली सरस्वती देवी राम मंदिर के उद्घाटन का गवाह बनने के लिए संभाव्य रात अयोध्या के लिए रवाना हुईं। देवी अयोध्या में 'मौनी भाता' के नाम से लोकप्रिय हैं। वह सांकेतिक भाषा के माध्यम से या लिखकर परिकर के सदस्यों के साथ बातचीत करती थीं।

देवी के सबसे छोटे बेटे 55 साल के रहे राम अग्रवाल ने बताया, 'जिस दिन छह दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद ढाई गई थी, मेरी मां ने अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण होने तक राखने का संकल्प लिया था। तब से मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की तारीख की घोषणा की गई है, तब से वह खुश हैं।'

बाघमारा प्रखंड के भोवरा के निवासी रहे राम ने कहा, 'महंत नृप गोपाल दास के शिष्यों में मां का राम मंदिर उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। वह भगवद रेलवे स्टेशन से रागा-सलतल एक्सप्रेस में संसार गया कि प्रत्येक प्रांत से ब्रह्मल्लुओं को अयोध्या लाने के लिए ट्रेन बुक कराई गई है।

इस दौरान ब्रह्मल्लुओं को लखे स्टेशन से अयोध्या में उनके ठहरने के स्थान तक पहुंचाने, रामलला के दर्शन और रामनगरी का भ्रमण करने के लिए जगाह-जगाह पर किए जाने वाले इंतजामों और इसके लिए आवश्यक मानव संसाधन तैनात करने पर चर्चा हुई। यह भी तय हुआ कि देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाले लोगों की सुविधा के लिए ब्रह्मल्लुओं के साथ संबंधित भाषाओं के दुभाषिय नियुक्त किए जाएं।

होकर सोमवार रात अयोध्या के लिए रवाना हुईं। 22 जनवरी को अपना मौन व्रत तोड़ेंगी।

परिवार के सदस्यों ने बताया कि चार बेटियों सहित आठ बच्चों की मां देवी ने 1986 में अपने पति देवीकानंदन अग्रवाल की मृत्यु के बाद अपना जीवन भगवान राम को समर्पित कर दिया और अपना अधिकार समय तीर्थयात्राओं में बिताया। वह वर्तमान में भगवद के धर्म में अपने दूसरे स्वप्न से बड़े बेटे नंदलाल अग्रवाल के साथ रह रही हैं, जो कोल उद्योग की शाखा भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) में एक अधिकारी हैं।

एक घंटे करती थीं बात, फिर...

'नंद लाल की पत्नी 53 वर्षीय नृप गोपाल दास के शिष्यों में मां का राम मंदिर उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। वह भगवद रेलवे स्टेशन से रागा-सलतल एक्सप्रेस में संसार गया कि प्रत्येक प्रांत से ब्रह्मल्लुओं को अयोध्या लाने के लिए ट्रेन बुक कराई गई है।

अतिथियों के लिए लक्ष्मण रेखा

अयोध्या। 22 जनवरी को शुभ मुहूर्त में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आने वाले विशिष्ट अतिथियों के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र टट्टर ने लक्ष्मण रेखा खींची दी है। समारोह में प्रवेश करने वाले महाभारत को कुछ नियमों का पालन करना होगा। इसके अलावा प्रवेश करने आगंतुकों को प्रवेश दिया जाएगा। टट्टर की ओर से 7000 से अधिक मेजबानों को समारोह निमंत्रण दिया गया है। राम मंदिर में प्रवेश के दौरान महंत जी अतिथि को भोजन और पर्यटकों के लिए सफाई गैरेजस को ले जाने की जा संभाला जा रहा है। इसमें इतर फेन और विभेद वाली चाबी शामिल है। समारोह में बड़ी संख्या में देश भर से संत और धर्माचार्य भी आएंगे। इन्हें अपने साथ पारंपरिक रूप से छत्र, चंद्र, उखरू, जी, निहासन और गुरु पादुका ले जाने की इजाजत नहीं मिलेगी। सभी अतिथियों को सुबह 11 से पहले ही समारोह स्थल पर प्रवेश कर लेना होगा। किसी भी विशिष्टताओं और धर्माचार्य के साथ संपर्क नहीं कर सकते हैं। प्रभुमंजरी के रचनात्मक रूप में प्राण प्रतिष्ठा की सभी प्रक्रिया पूरी करने के बाद प्रवेश से चले जाने पर ही आगंतुक को रामलला के दर्शन मिलेंगे।

लिया खाने-पीने की व्यवस्था, साथ ही उनके परिवारों के लिए खाने की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली और सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर व्यवस्थित करने का काम। उन्होंने कहा की सभी डॉक्टरों संवेदनशीलता के साथ काम करें। जिससे लोगों के बीच अच्छा संदेश जाएगा। इससे अस्पताल की गरिमा बढ़ेगी। इसमेंही केस आने पर चिकित्सक अपने इयूटी के बाद भी अतिरिक्त समय लेकर व्यवस्था बनाएँ। इससे मरीजों को राहत मिलेगी। इस अवसर पर चिकित्सक एवं अन्य कर्मचारी

[illegible]

स्वाधिकाारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा मीनल पब्लिकेशन एंड प्रोडक्शन प्रा. लि. शेड नं. 74 सररोड रोड उरला इंडस्ट्रीयल एरिया से मुद्रित कर ब्रिस्टल चौक छोटापारा रायपुर से प्रकाशित, प्रबंध संपादक-चन्द्रशेखर धोटे, फोन : 0771-3526755, 6262188999, डाक पंजीयन क्रमांक CG/RYP/DN/ 40/2019-2021

क्रिकेट बोर्ड ने मुजीब, फजल,
नवीन पर लगा प्रतिबंध हटाया

सुनिश्चित करते हुए फेब्रुअरी लीग में भाग लेने की अनुमति देंगे। खिलाड़ियों के एसीबी के पास बिना वात संपर्क करने और फिर से देश का प्रतिनिधित्व करने की तीव्र इच्छा जताने पर एसीबी ने एक व्यापक जांच शुरू की। एसीबी के बयान में कहा गया है, 'हलिया घटनाक्रम के अलावा कम से कम खिलाड़ियों के सुरक्षागत रूख का मूल्यांकन करने और श्रेष्ठ टीम में उनके रहने के महत्व को स्वीकार करने के बाद निजिजी समिति ने बोर्ड को अपनी अंतिम सिफारिशें वापस लाई। बयान में कहा गया है, एक अंतिम चेतावनी और वेतन कटौती परलेके खिलाड़ी को एक अंतिम लिखित चेतावनी मिलेगी।'

वैशाली (शतरंज), मोहम्मद शमी (क्रिकेट), अनुश अग्रवाल (घुड़सवारी), दिव्यकृति सिंह (घुड़सवारी ड्रेसेज), दीक्षा डागर

प्रमाण अपनी बेवफा
 अथवा व्याकरण प्रशंसा
 ने स्फूर्ति सौंदर्य से
 किसी से बात नहीं
 कहा है, जब तक कि
 न रहा है, जयन के
 से उनकी खुश हो कि
 की भीगी कर रहा है
 या कुछ भी कर रहा
 के भारत दूर के
 बात परियों में तीन
 में पहले दो मैचों से
 द उन्होंने नई सोच
 के अन्दर के श्रद्धा मोदी
 अनुकूल पिचों पर
 कर रहा कि इलेक्ट्रिक
 उनकी अति आक्रमक

साथ २०२४ की शुरुआत की है।
ने साझा किया कि उन्हें इस भाषा में
में आराम मिलता है। उन्होंने इसे
म्यूजिकल हैप्पी प्लेस बताया।
एक रोमांटिक सॉनग है। इस गाने
लेकर अपने एक्स्पेरियंस के बारे में
करते हुए, अरमान मलिक ने कहा-
खुरी की जगह है। बहुत उत्साहित हूँ

न्यायालय तहसीलदार पलांगी जिला बलौदालवा -भाटपाड़ा (छत्तीसगढ़) //

// ईश्वरदास //

रा.प्र.अ. अव/74 वर्ष 2022-23
पञ्चायत समित्य वकील ग्राम औरंगाबाद
रा.नि.मं वेरुन्दना तहसील पलांगी
जिल्ला बलौदालवा भाटपाड़ा छ.प्र.

से एडएसएल को स्मार्ट मोडर्स और ग्लिक्लेशंस के बीच रियल-टाइम मॉनटरिंग और महत्वपूर्ण डेटा को आसानी से पढ़ने सुनिश्चित होगा। यह समाधान के आईओटी प्लेटफॉर्म - 'एयरटेल हब' से पावर्ड होगा। यह प्लेटफॉर्म विश्लेषणों और नैदानिक क्षमताओं को मोडर मोड की ट्रैकिंग और ऑप्टिमाइजेशन प्रदान करता है। इसके अलावा यह क समय में जानकारी और सेवाएं देगा, जिससे ग्राहकों को अपने ऊर्जा को बेहतर नियंत्रण रखने में आसानी

यायालय अनुविभागीय अधिकारी
(रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

वन विभाग ने पहले वृक्ष के डालों की छटाई करके एक्सकेवेटर से पेड़ों के चारों ओर खुदाई कर पेड़ को ज़ेन से उत्काट ट्रंसप्लांट करने वाले स्थान पर पहुंचाया। फिर वन विभाग के ही वीथीधारण प्लांट में पहले से तैयार गड्ढे तक पेड़ को लाने के बाद विभिन्न स्थानों का जर्जों में और गड्ढे में डिट्टीकाव किया गया। फिर ज़ेन से ही पेड़ को गड्ढे में उतार कर मिट्टी से भर दिया गया। पेड़ को खड़ा करने के बाद हल्दी का लेप भी पेड़ पर लगाया गया।

[illegible]